**अंक योजना (1) (2020-21)**

**कक्षा XII विषय: अर्थशास्त्र (030)**

| प्रश्न संख्या | अपेक्षित उत्तर | अंक |
|---|---|---|
| 1. | (द) अनिवासी भारतीयों द्वारा प्रेषित धन | 1 |
| 2. | (द) न्यास मुद्रा | 1 |
| 3. | (द) वित्त मंत्रालय | 1 |
| 4. | संकुचन | 1 |
| 5. | शेष विश्व से उधार और शेष विश्व को परिसंपत्तियों की बिक्री । | 1 |
| 6. | घरेलू अर्थव्यवस्था में विदेशी निवेशकों के पास आर्थिक शक्ति का केंद्रीयकरण । | 1 |
| 7. | वृद्धि | 1 |
| 8. | अवस्फीति | 1 |
| 9. | मुद्रा पूर्ति में वृद्धि | 1 |
| 10. | (द) आय, उत्पादन, रोजगार और सामान्य कीमत स्तर में कमी। | 1 |
| 11. | दिन- प्रतिदिन निजी वाहनों की बिक्री से, इन निर्दिष्ट वाहनों के उत्पादन में वृद्धि हुई है । स्टॉक में होने वाली वृद्धि जीडीपी (GDP) में वृद्धि को दर्शाती है । परंतु दूसरी ओर यह पर्यावरण प्रदूषण को बढ़ाता है । पर्यावरण प्रदूषण में होने वाली वृद्धि लोगों के कल्याण में गिरावट का कारण है ।<br>अथवा<br>खंडन : सामाजिक कल्याण दोनों तत्वों पर निर्भर करता है। व्याख्या :-<br>[संकेत- लोगों द्वारा अपेक्षित आवश्यकताओं के भंडार में वृद्धि के साथ-साथ वस्तुओं और सेवाओं की मात्रा में वृद्धि द्वारा सामाजिक कल्याण को अवश्य ही प्राप्त किया जाना चाहिए।] | 3 |
| 12. | 'आत्मनिर्भर भारत अभियान' वस्तुओं और सेवाओं के निर्माण में भारतीय अर्थव्यवस्था को आत्मनिर्भर बनाने तथा चिकित्सा जैसी आवश्यक वस्तुओं के लिए अन्य देशों पर निर्भरता को कम करने की दिशा में एक श्रेष्ठ अभियान है। यदि निर्भरता कम हो जाती है तो आयातों में भी कमी आएगी। आयात में गिरावट से विदेशी मुद्रा की माँग में कमी आएगी, जो अंततः विदेशी मुद्रा की दर में गिरावट को दर्शाती है। | 3 |
| 13. | उपरोक्त रिपोर्ट 4.7% की धीमी विकास दर को उजागर करने के साथ-साथ उपभोग और निवेश में गिरावट को दर्शाती है। यहां सभी विशेषताएँ अर्थव्यवस्था में माँग में कमी या अपस्फीति की स्थिति को दर्शाती है।<br>इस स्थिति को सुधारने के लिए RBI द्वारा जो उपाय किए जा सकते हैं वे हैं :-<br>मात्रात्मक उपकरण-<br>(i) बैंक दर<br>(ii) खुले बाजार की क्रियाएं (प्रतिभूतियों का क्रय तथा विक्रय)<br>(iii) रेपो दर<br>(iv) रिवर्स रेपो दर | 4 |

https://www.evidyarthi.in

| | | |
|---|---|---|
| | (v) नकद आरक्षित अनुपात<br>(vi) वैधानिक तरलता अनुपात<br>गुणात्मक उपकरण-<br>(vii) सीमांत आवश्यकता<br>(viii) साख की राशनिंग<br>(ix) नैतिक प्रभाव<br>[उपरोक्त में से किन्हीं दो की व्याख्या] | |
| 14. | जैसा कि, आर्थिक मंदी अर्थव्यवस्था में अवस्फीतिक की स्थिति को दर्शाती है । इसलिए सरकार द्वारा संचालित कार्यक्रम जैसे स्टार्ट-अप इंडिया, मेक-इन इंडिया आदि के माध्यम से अर्थव्यवस्था में घरेलू और विदेशी निवेशकों द्वारा निवेश में वृद्धि होगी, इससे बाजार में पूँजी के प्रवाह में वृद्धि होगी । परिणामस्वरुप यह अपस्फीति की स्थिति को ठीक करने में सहायक होगा । | 4 |
| 15. | EF अंतराल स्फीतिक अंतराल या आधिक्य माँग की स्थिति को दर्शाता है । आधिक्य माँग की स्थिति को सुधारने के लिए, सरकार द्वारा किए गए उपाय निम्नलिखित हैं-<br>(i) सरकारी व्यय में कमी<br>(ii) करों में वृद्धि<br>(iii) सार्वजनिक उधार/सार्वजनिक ऋण में वृद्धि<br>(iv) RBI(केंद्रीय बैंक) से उधार न लेना<br>[उपरोक्त में से किन्हीं दो की व्याख्या] | 4 |
| 16. | (i) $NDP_{FC}$ =कर्मचारियों की क्षतिपूर्ति+ प्रचालन अधिशेष + मिश्रित आय<br>4000 = 2400 + प्रचालन अधिशेष + 400<br>4000-2800 = प्रचालन अधिशेष<br>1200 करोड़ रु० = प्रचालन अधिशेष<br>(ii) $GDP_{MP}$ = निजी अंतिम उपभोग व्यय + सरकारी अंतिम उपभोग व्यय + सकल घरेलू पूँजी निर्माण (सकल घरेलू स्थिर पूँजी निर्माण + स्टॉक में परिवर्तन) + शुद्ध निर्यात<br>$GDP_{MP}$ =$NDP_{FC}$ + स्थिर पूँजी का उपभोग + शुद्ध अप्रत्यक्ष कर<br>= 4000+100+150 = 4250<br>4250 = 2000+1000+ (1000+100) + शुद्ध निर्यात<br>4250 = 3000+1100+ शुद्ध निर्यात<br>4250 - 4100 = शुद्ध निर्यात<br>शुद्ध निर्यात = 150 करोड़ रु०<br>अथवा<br>(i) हाँ, यह राष्ट्रीय आय में शामिल किया जाएगा, क्योंकि यह निवेश व्यय का एक भाग है।<br>(ii) नहीं, यह राष्ट्रीय आय में शामिल नहीं किया जाएगा, क्योंकि यह एक हस्तांतरण भुगतान है। | 6 |

https://www.evidyarthi.in

| | | |
|---|---|---|
| | (iii) हाँ, यह राष्ट्रीय आय में शामिल किया जाएगा, क्योंकि यह सरकार के अंतिम उपभोग व्यय का एक भाग है। | |
| 17. | (अ) (i) यह पूंजीगत व्यय है क्योंकि यह सरकार के लिए परिसंपत्तियों का निर्माण करता है ।<br>(ii) यह राजस्व व्यय है जिसके कारण परिसंपत्तियों में कोई वृद्धि नहीं होती, न ही दायित्व में कोई कमी होती है।<br>(iii) यह राजस्व व्यय है जिसके कारण परिसंपत्तियों में कोई वृद्धि नहीं होती, न ही दायित्व में कोई कमी होती है।<br>(ब) हाँ, यह सत्य है कि विमुद्रीकरण से सरकार को अपने वित्तीय घाटे को कम करने में मदद मिलेगी। विमुद्रीकरण के कारण काले धन की अर्थव्यवस्था सिकुड़ जाएगी। अकथनीय उत्पादन और अकथनीय आय को अब क्रमशः जीडीपी और राष्ट्रीय आय के एक हिस्से के रूप में जाना जाएगा । करों के माध्यम से सरकार की राजस्व प्राप्ति में वृद्धि होगी। तदनुसार, सरकार की कर प्राप्तियों में वृद्धि से राजकोषीय घाटा कम होगा। | 3+3 |
| 18. | (ब) 1991 | 1 |
| 19. | (ब) विनिवेश | 1 |
| 20. | अभिकथन(A) और कारण (R) दोनों सत्य हैं और कारण (R), अभिकथन(A) का सही विवरण है। | 1 |
| 21. | (i) - ब, (ii) - द, (iii) - स, (iv) - अ<br>अथवा<br>विकल्प(अ) (अभिकथन(A) और कारण (R) दोनों सत्य हैं और कारण (R), अभिकथन(A) का सही विवरण है। | 1 |
| 22. | (द)राज्यवाद | 1 |
| 23. | (स)पाकिस्तान | 1 |
| 24. | कृषि क्षेत्र-संरचनात्मक समस्याएँ - आय की असमानताएँ, निम्न मजदूरी, अनौपचारिक श्रमिक | 1 |
| 25. | उचित कारणों के साथ, कथन का समर्थन | 1 |
| 26. | अनौपचारिक संगठन | 1 |
| 27. | लघु, कुटीर एवं मध्यम उपक्रम | 1 |
| 28. | धारणीय विकास के उद्देश्यों को प्राप्त करने में पारंपरिक कार्यप्रणाली की उपयोगिता निम्न प्रकार से सहायक हो सकती है।<br>(i) आगत -कुशल प्रौद्योगिकी<br>(ii) पर्यावरण-मैत्री ऊर्जा के स्रोतों का प्रयोग<br>(iii) सूर्य के प्रकाश को सौर-ऊर्जा और सौर-ऊर्जा को विद्युत में परिवर्तित करकें<br>(iv) जैविक खेती<br>(v) अपशिष्ट का प्रबंधन [किन्हीं दो की व्याख्या]<br>अथवा | 3 |

https://www.evidyarthi.in

| | | |
|---|---|---|
| | उच्च जनसंख्या वृद्धि दर से निर्भरता अनुपात बढ़ेगा और इससे निर्धनता में भी वृद्धि होगी। यदि जनसंख्या वृद्धि, उत्पादन की प्रति-व्यक्ति उपलब्धता में वृद्धि से अधिक होगी। | |
| 29. | गैर-कृषि गतिविधियों में वृद्धि किए जाने से भूमि पर दबाव को कम करने के करने के साथ-साथ प्रच्छन्न बेरोजगारी में भी कमी<br>आएगी । अतिरिक्त श्रम को गैर -कृषि गतिविधियों में लगाया जा सकेगा । इससे ग्रामीण क्षेत्रों में आय के अतिरिक्त स्रोतों में वृद्धि होगी । | 3 |
| 30. | हाँ, हरित क्रांति के लाभ महत्वपूर्ण हैं लेकिन पर्याप्त नहीं हैं । निम्नलिखित सीमाएँ स्पष्ट करती हैं:-<br>(i) सीमित फसलें<br>(ii) लाभों का असमान वितरण<br>(iii) छोटे और सीमांत किसानों की अधिक संख्या<br>(iv) आर्थिक विभाजन<br>[उपरोक्त सभी बिंदुओं की व्याख्या]<br>अथवा<br>भारत के निर्यात पर अंतर्मुखी रणनीति से बाह्यमुखी रणनीति की ओर खिसकाव से घरेलू और विदेशी निवेशकों द्वारा निवेश में वृद्धि के साथ बाजार का विस्तार होगा । परिणामस्वरूप निर्यातों में वृद्धि होगी। | 4 |
| 31. | एलपीजी नीतियों ने भारतीय अर्थव्यवस्था पर कुछ अनुकूल प्रभाव दिखाया है जो इस प्रकार से हैं:-<br>(i) औद्योगिक उत्पादकता में वृद्धि<br>(ii)राजकोषीय घाटे में कमी<br>(iii) विदेशी मुद्रा भंडार में वृद्धि<br>(iv) निजी विदेशी निवेश में वृद्धि<br>(v) एकाधिकार से प्रतिस्पर्धात्मक बाजार की ओर परिवर्तन<br>(vi) मुद्रास्फीति पर नियंत्रण आदि<br>(किन्हीं 4 बिंदुओं की व्याख्या) | 4 |
| 32. | भारत, पाकिस्तान और चीन की उपलब्धियों की व्याख्या। [स्पष्टीकरण] | 4 |
| 33. | (अ) प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना" को प्रारम्भ करने से लोगों के<br>स्वास्थ्य में वृद्धि होगी।[व्याख्या]<br>(ब) मैं इस कथन से सहमत हूँ, कि राष्ट्रीय कौशल-विकास कार्यक्रम के साथ-साथ नई शिक्षा-नीति का अनुप्रयोग ,भारत में मानव पूँजी में सुधार करेगा क्योंकि :-<br>(i)शिक्षित व्यक्ति अधिक आय अर्जित करता है।<br>(ii)यह बेहतर सामाजिक प्रतिष्ठा और गौरव प्रदान करता है।<br>(iii)जीवन में बेहतर विकल्प चुनने में सक्षम बनाता है।<br>(iv)समाज में होने वाले परिवर्तनों को समझने के लिए ज्ञान<br>प्रदान करता है। | 6 |

https://www.evidyarthi.in

| | | |
|---|---|---|
| | अथवा<br>(अ) हाँ, आधारभूत सुविधाएँ सकारात्मक रूप से आर्थिक विकास से संबंधित हैं-<br>(i) उत्पादकता में वृद्धि<br>(ii) प्रेरित निवेश<br>(iii) बाजार के आकार का विस्तार<br>(iv) उत्पादन में सहलग्नता उत्पन्न करना<br>[व्याख्या]<br>(ब) मानव पूँजी निर्माण से शिक्षित और कुशल लोगों की उपलब्धता बढ़ेगी जो भौतिक पूँजी की उत्पादकता को बढ़ाती है। परिणामस्वरूप आय में वृद्धि से जीवन की गुणवत्ता में वृद्धि होगी।<br>(स) हाँ, भारत को ऊर्जा के नवीकरणीय स्रोतों पर अधिक ध्यान केंद्रित करना चाहिए क्योंकि इससे निम्नलिखित लाभ हैं-<br>(i) पर्यावरण के लिए हितकारी<br>(ii) सस्ता(सुलभ) इत्यादि ।<br>[व्याख्या] | |
| 34. | (i) औद्योगिक क्षेत्रकों के आधार पर श्रमबल का वितरण यह दिखाता है कि श्रमबल कृषि कार्यों से हटकर गैर- कृषि कार्यों की ओर बड़े पैमाने पर बढ़ रहा है । जहां 1972-73 में प्राथमिक क्षेत्रक में 74% श्रमबल लगा था, वही 2011-12 में यह अनुपात घटकर 50% रह गया है। द्वितीयक और सेवा क्षेत्रक भारत के श्रमबल के लिए आशावादी भविष्य का संकेत दे रहे हैं। इन क्षेत्रकों की हिस्सेदारी क्रमशः 11 से बढ़कर 24 और 15 से बढ़कर 27% हो गई है । विभिन्न स्थितियों में श्रमबल के वितरण को देखें तो पिछले चार दशकों में लोग स्वरोजगार और नियमित वेतन रोजगार से हटकर अनियत श्रम की ओर बढ़ रहे हैं । फिर भी स्वरोजगार, रोजगार का सबसे बड़ा स्त्रोत बना हुआ है ।<br>(ii) स्वरोजगार तथा नियमित वेतन से अनियत श्रम-रोजगार की ओर जाने की प्रक्रिया को 'श्रमबल के अनियतीकरण' का नाम दिया जाता हैं ।<br>(iii) हाँ, श्रम बल के अनियतिकरण से श्रमिकों की दशा बहुत नाजुक हो जाती है। [व्याख्या] | 6 |

https://www.evidyarthi.in